मानव संसाधन विकास

Human Resource Development

किसी भी देश का विकास केवल बहुत बड़े क्षेत्र अथवा बहुत से प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर नहीं करता, बल्कि इन संसाधनों को सम्पदा में बदलने के लिए मानव प्रयास आवश्यक होता है। जनसंख्या का आकार और इसकी गुणवत्ता सम्पदा पैदा करने में मदद करती है। वास्तव में जनसंख्या ही किसी देश की सच्ची संपत्ति होती है। वहाँ का आर्थिक जीवन, विकास तथा कल्याण बहुत सीमा तक जनसंख्या के आकार एवं गुण कोटि पर निर्भर करता है। मनुष्य आर्थिक क्रियाओं का साधन मात्र ही नहीं है बल्कि उसका साध्य भी है।

मानव संसाधन विकास का अर्थ शिक्षा तथा प्रशिक्षण पर व्यय करना है जब कि विस्तृत दृष्टिकोण में स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी सामाजिक सेवा व्यय भी शामिल करता है।

मानव संसाधन का अर्थ एवं अभिप्राय :- 'मानव संसाधन' शब्द को राजनीतिक अर्थव्यवस्था तथा अर्थशास्त्र में अलग-अलग रूप से परिभाषित किया गया है। अर्थशास्त्र में जहाँ इसे उत्पादन के तीन साधनों में से एक 'श्रम' के रूप में माना जाता है, वहीं राजनीतिक अर्थव्यवस्था में इसे सृजनात्मक और सामाजिक जीव माना जाता है जो एक समाज तथा सभ्यता को 'श्रम' से अधिक योगदान देते हैं।

व्यापक अर्थों में अगर देखा जाय तो 'मानवीय पूंजी' इस शब्द विकसित की जटिलता को बनाए रखने के रूप में विकसित हुई है। लेकिन समष्टि अर्थशास्त्र में फर्म-विशिष्ट मानवीय पूंजी' शब्द विकसित हुआ है जो मानव संसाधन के मौलिक अर्थ को प्रस्तुत करता है। आज के कई व्यवसायों जैसे उच्च तकनीक, बायोटेक्नोलॉजी आदि में एक अति दुर्लभ साधन के रूप में मानवीय पूंजी ने वित्तीय पूंजी का स्थान ले लिया है। इसका कारण यह है की नवप्रवर्तन एक बहुत ही महत्वपूर्ण

Scanned with CamScanner

आर्थिक क्रिया बन चुका है, जो कंपनियों तथा राष्ट्रों के लिए अधिकांश आर्थिक मूल्य का सृजन करता है और नवप्रवर्तन अधिकांश रूप से मानव मस्तिष्क पर निर्भर करता है।

मानव संसाधन विकास की आवश्यकता :— किसी भी देश का आर्थिक विकास इस देश के मानव संसाधन पर निर्भर करता है। मानव संसाधन का विकास आर्थिक विकास की पूर्व आवश्यकता में आता है। मानव संसाधन की कार्यकुशलता तथा प्रशिक्षण जितने उच्च स्तर का होता है, विकास की दर भी उतनी ही ऊँची होती है। अतएव मानव संसाधनों के विकास से ही भारत जैसे अल्पविकसित देश की अर्थव्यवस्था को विकासोन्मुख बनाया जा सकता है और भावी प्रगति को नई दिशा प्रदान की जा सकती है। निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट किया जा सकता है —

- भारत में लोगों की आय बढ़ाने और जीवन स्तर ऊँचा करने के लिए मानव संसाधन का विकास आवश्यक है।
- देश की भौतिक पूंजी तब अधिक उत्पादक बन जाती है जब इसका कुशलता से प्रयोग किया जाता है।
- ऐसा पाया गया है मानवीय पूंजी निर्माण में निवेश अधिक प्रतिफल उपलब्ध कराता है और इस प्रकार के लिए, श्रमिकों के प्रशिक्षण पर किया गया व्यय उनकी उत्पादकता में वृद्धि लाता है।
- विकास की प्रारंभिक अवस्था में अल्पविकसित देशों में मानवीय पूंजी निर्माण का विशेष महत्व एवं जरूरत होती है क्योंकि इस अवस्था में विकसित मानव संसाधन का होना आवश्यक होता है।
- उत्पादक संसाधनों के रूप में मनुष्य में आवश्यक कुशलता का विकास देश के विकास के लिए आवश्यक होता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मानव संसाधन के विकास में किया गया निवेश देश के आर्थिक विकास की दर को बढ़ाने में और प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम उपयोग के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है।

Scanned with CamScanner

मानव संसाधन के विकास में बाधाएं :—

(a) जनसंख्या का दबाव मानव संसाधन के विकास में निवेश की क्षमता को कम करता है।
(b) उच्च तकनीकि शिक्षा का अभाव है।
(c) कृषि अल्पविकसित देशों की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है, फिर भी कृषि विकास पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है।
(d) आय बचत तथा विनियोग की दर में कमी है।
(e) भौतिक पूंजी संचय के मामले में तो दृष्टि मापनीय है, परंतु मानवीय पूंजी की दृष्टि दर को निरपेक्ष रूप से मापना बहुत कठिन है।

मानव संसाधन के विकास में सहायक सिद्ध होने वाले उपाय

- जनसंख्या वृद्धि दर में कमी।
- मानशक्ति का उचित आयोजन
- जनसाधनों में विकास की आकांक्षा
- सामान्य शिक्षा तथा तकनीकि ज्ञान को बढ़ावा
- स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का विकास

वस्तुतः मानव संसाधन विकास दर को बढ़ाए जाने वाले उपाय या नीति एक देश से दूसरे देश के लिए भिन्न-भिन्न हो सकती है।

मानव संसाधन के विकास के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास

मानव संसाधन के आधारभूत विकास के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र अनिवार्य माने जाते है। शिक्षा से अभिप्राय लोगों के पढ़ने लिखने तथा समझने की योग्यता से है जबकि स्वास्थ्य मनुष्य के स्वास्थ्य और रोगरहित जीवन से संबंधित है।
शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों ही क्षेत्रों में सरकार द्वारा सराहनीय प्रयास किया गया है जो निम्नलिखित है:—
शिक्षा के क्षेत्र में :— 1951 में भारत की कुल जनसंख्या का 16% भाग साक्षर था जबकि 2001-02 में यह बढ़कर 65% हो गया प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च और तकनीकि शिक्षा में भी काफ

Scanned with CamScanner

प्रगति हुई है। योजनाओं की अवधी में शिक्षा संस्थानों की संख्या लगभग चार गुना और छात्रों की संख्या लगभग पांच गुना बढ़ चुकी है —

प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत 6 से 14 साल तक की आयु वर्ग बच्चों में कक्षा 1 से कक्षा 8 तक के छात्र आते हैं।

माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की एक कड़ी के रूप में कार्य करती है और 14-18 वर्ष के आयु समूह के बीच युवा व्यक्तियों को उच्च शिक्षा और कार्य करने के लिए तैयार करती है।

उच्चतर तकनीकी शिक्षा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थानों में काफी वृद्धि हुई है। आज लगभग 100 विभिन्न विश्वविद्यालय शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के क्षेत्र में

किसी भी व्यक्ति के कार्य करने की योग्यता एवं क्षमता काफी सीमा तक उसके स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। अच्छा स्वास्थ्य जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि लाता है। जनसंख्या के स्वास्थ्य में विकास होना मानव संसाधन विकास का एक महत्वपूर्ण तत्व है। भारत सरकार ने चिकित्सा एवं लोक-स्वास्थ्य सुधार के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को अपनाया गया है।

- राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन: भारत सरकार ने 12 अप्रैल 2005 को ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनतम परिवारों के सदस्यों की सस्ती एवं विश्वसनीय गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएँ मुहैया कराने के लिए किया गया है।

- प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना :— देश में सस्ती और विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में क्षेत्रीय असंतुलनों को सुधारने तथा उच्च स्तरीय चिकित्सा शिक्षा की सुविधाओं में तेजी लाने के उद्देश्य से 2006 में आरंभ किया गया था।

Scanned with CamScanner

- आयुर्वेद, योजना एत प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी :— आयुष के अंतर्गत पूरे देश में 3360 अस्पताल और 21769 औषधालयों का तंत्र है। आयुष द्वारा मुहैया कराए गए स्वास्थ्य सेवा का केन्द्र बिंदु मुख्यतः प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल है।

- विद्यालयों में राष्ट्रीय दोपहर भोजन कार्यक्रम :- इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्राथमिक कक्षा के बालकों को 450 कैलोरी और 12 ग्राम प्रोटीन का भोजन दोपहर में मुहैया कराया जाता है। इस कार्यक्रम के लिए पर्याप्त मात्रा में लौह, फोलिक एसिड और विटामिन-ए जैसे पोषाहार तत्वों की उपलब्ध कराने की सिफारिश की गई है।

—x—

◇◇◇

Scanned with CamScanner